अध्याय 11: विश्वरूपदर्शनयोग

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.1**

> अर्जुन उवाच
>
> मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् |
>
> यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम || **1** ||

हिन्दी अनुवाद:
अर्जुन बोले—मुझ पर अनुग्रह (कृपा) करने के लिए आपने जो परम गोपनीय 'अध्यात्म' विषयक वचन कहे हैं, उनसे मेरा यह अज्ञान (मोह) नष्ट हो गया है।

सरल व्याख्या:
पिछले अध्यायों में भगवान ने जो आत्मा, परमात्मा और अपनी विभूतियों का ज्ञान दिया, उसे सुनकर अर्जुन का मानसिक भ्रम दूर हो गया है। वे अब समझ चुके हैं कि कर्ता और भोक्ता वास्तव में कौन है। ज्ञान के श्रवण मात्र से ही बुद्धि का अंधकार छंटने लगा है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... गुरु के वचनों को श्रद्धापूर्वक सुनने से ही मोह का नाश और विवेक का उदय होता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.2**

> भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया |
>
> त्वत्त कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम् || **2** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे कमल के समान नेत्रों वाले कृष्ण! मैंने आपसे भूतों (प्राणियों) की उत्पत्ति और प्रलय के विषय में विस्तार से सुना है और आपकी अविनाशी महिमा का भी अनुभव किया है।

सरल व्याख्या:
अर्जुन कहते हैं कि प्रभु, आपने बताया कि कैसे यह संसार आपसे निकलता है और आपमें ही मिल जाता है। आपकी यह लीला और आपका कभी न खत्म होने वाला ऐश्वर्य मैंने वाणी से तो सुन लिया है, और मेरा हृदय उसे सत्य मान चुका है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा ही सृष्टि के आदि और अंत के एकमात्र कारण हैं।

श्लोक संख्या: **11.3**

> एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर |
>
> द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम || **3** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे परमेश्वर! आप अपने विषय में जैसा कहते हैं, वह वैसा ही है। किंतु हे पुरुषोत्तम! मैं आपके उस ज्ञान, ऐश्वर्य, शक्ति, बल, वीर्य और तेज से युक्त 'ऐश्वर्यमय रूप' को प्रत्यक्ष देखना चाहता हूँ।

सरल व्याख्या:
यहाँ अर्जुन की जिज्ञासा पराकाष्ठा पर है। वे कहते हैं, "प्रभु, मैंने जान तो लिया कि आप सबमें हैं, पर अब मेरी इच्छा है कि मैं आपको उस 'विराट' रूप में देखूँ जिसमें आप इस पूरे ब्रह्मांड को धारण किए हुए हैं।" यह भक्ति की वह अवस्था है जहाँ भक्त अपने आराध्य के साक्षात दर्शन के लिए व्याकुल उठता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ज्ञान जब परिपक्व होता है, तो वह 'अनुभव' और 'दर्शन' में बदलने की तीव्र इच्छा पैदा करता है।

श्लोक संख्या: **11.4**

> मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो |
>
> योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् || **4** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे प्रभो! यदि आप ऐसा मानते हैं कि मेरे द्वारा आपका वह रूप देखा जाना संभव है, तो हे योगेश्वर! आप मुझे अपने उस अविनाशी स्वरूप का दर्शन कराइए।

सरल व्याख्या:
अर्जुन यहाँ बहुत विनम्र हैं। वे यह दावा नहीं करते कि "मुझे दिखाओ ही", बल्कि वे कहते हैं कि "यदि आपको लगे कि मैं उस रूप को देखने के 'लायक' हूँ, तभी दिखाइये।" वे जानते हैं कि परमात्मा का विराट स्वरूप चर्म चक्षुओं (साधारण आँखों) का विषय नहीं है, वह केवल उनकी कृपा से ही संभव है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वरीय दर्शन के लिए योग्यता के साथ-साथ अत्यंत विनम्रता और प्रभु की सहमति अनिवार्य है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.5**

> श्रीभगवानुवाच
>
> पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः |
>
> नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च || **5** ||

हिन्दी अनुवाद:
श्रीभगवान बोले—हे पार्थ! अब तू मेरे सैकड़ों और हजारों नाना प्रकार के दिव्य रूपों को तथा नाना वर्ण (रंगों) और नाना आकृतियों को देख।

सरल व्याख्या:
अर्जुन की प्रार्थना स्वीकार करते हुए भगवान ने अपना विराट स्वरूप प्रकट करना शुरू किया। वे कहते हैं कि अब एक जगह स्थिर होकर मत देखो, बल्कि मेरे उन अनंत रूपों को देखो जो हर रंग, हर आकार और हर भाव में मौजूद हैं। यहाँ से भगवान अर्जुन की दृष्टि को संसार की सीमाओं से उठाकर अनंत की ओर ले जा रहे हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा एक होते हुए भी अनंत रूपों और विविधता में अभिव्यक्त हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.6**

> पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा |
>
> बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत || **6** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे भरतवंशी अर्जुन! तू मुझमें आदित्यों को, वसुओं को, रुद्रों को, अश्विनीकुमारों को और मरुद्गणों को देख; तथा और भी बहुत से ऐसे आश्चर्यजनक रूपों को देख, जिन्हें पहले कभी किसी ने नहीं देखा।

सरल व्याख्या:
भगवान ने अर्जुन के सामने उन शक्तियों को प्रत्यक्ष कर दिया जिनका वर्णन पिछले अध्याय में किया गया था। वे कहते हैं कि वे रहस्य देखो जिन्हें आज तक किसी मानवीय आँख ने नहीं देखा। यह वह दृश्य है जो कल्पना से भी परे है, जहाँ काल और आकाश की सीमाएं मिट जाती हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर के विराट रूप में समस्त ब्रह्मांडीय शक्तियाँ और अनकहे रहस्य एक साथ विद्यमान हैं।

श्लोक संख्या: **11.7**

> इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम् |
>
> मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि || **7** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे अर्जुन! अब तू मेरे इस शरीर में एक जगह स्थित, चराचर सहित संपूर्ण जगत को देख और इसके सिवाय जो कुछ भी तू देखना चाहता है, वह भी देख ले।

सरल व्याख्या:
भगवान कहते हैं कि तुम्हें कहीं भटकने की ज़रूरत नहीं। मेरे इस एक ही स्वरूप के भीतर तुम वर्तमान, भूत और भविष्य—सब कुछ देख सकते हो। यहाँ तक कि इस युद्ध का परिणाम भी तुम यहीं देख सकते हो। पूरा ब्रह्मांड भगवान के शरीर का एक हिस्सा मात्र बनकर सामने खड़ा है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा वह केंद्र हैं जहाँ पूरा ब्रह्मांड एक साथ समाहित है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.8**

> न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा |
>
> दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् || **8** ||

हिन्दी अनुवाद:
परंतु तू मुझको अपनी इन प्राकृत आँखों (साधारण नेत्रों) से नहीं देख सकता; इसलिए मैं तुझे 'दिव्य चक्षु' देता हूँ, उससे तू मेरी ईश्वरीय योग-शक्ति को देख।

सरल व्याख्या:
हमारी साधारण आँखें केवल पदार्थ (Matter) को देख सकती हैं, परमात्मा को नहीं। जैसे बिजली को देखने के लिए विशेष यंत्र चाहिए, वैसे ही विराट स्वरूप को देखने के लिए 'विवेक' या 'दिव्य दृष्टि' चाहिए। भगवान ने अपनी कृपा से अर्जुन की चेतना को उस स्तर तक उठा दिया जहाँ वह अनंत को देख सके।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... सत्य के साक्षात दर्शन के लिए केवल भौतिक साधन पर्याप्त नहीं, परमात्मा द्वारा दी गई अंतर्दृष्टि आवश्यक है।

श्लोक संख्या: 11.9

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः |

दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् || 9 ||

हिन्दी अनुवाद:
संजय बोले—हे राजन्! महायोगेश्वर भगवान हरि ने अर्जुन को इस प्रकार कहकर, अपना परम ऐश्वर्ययुक्त दिव्य विराट रूप दिखाया।

सरल व्याख्या:
संजय धृतराष्ट्र को बता रहे हैं कि जैसे ही भगवान ने दिव्य दृष्टि दी, उन्होंने अपना वह रूप प्रकट कर दिया जिसकी कल्पना भी असंभव है। 'महायोगेश्वर' शब्द यहाँ यह दर्शाता है कि भगवान समस्त शक्तियों के स्वामी हैं और वे अपनी माया से कुछ भी प्रकट करने में समर्थ हैं।

यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा की कृपा होते ही साधक के सामने सत्य का साक्षात स्वरूप प्रकट हो जाता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: 11.10-11

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् |

अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् || 10 ||

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् |

सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् || 11 ||

हिन्दी अनुवाद:
उस विराट रूप में अनेक मुख और अनेक नेत्र थे; अनेक अद्भुत दर्शन थे; बहुत से दिव्य आभूषणों से सुसज्जित और बहुत से दिव्य शस्त्रों को उठाए हुए था। वह दिव्य मालाओं और वस्त्रों को धारण किए हुए था, दिव्य गंधों का लेपन किए हुए था—वह सब प्रकार के आश्चर्यों से युक्त, प्रकाशमान, अनंत और सब ओर मुख वाला था।

सरल व्याख्या:
संजय उस दृश्य का वर्णन कर रहे हैं जहाँ दिशाएँ समाप्त हो गई हैं। भगवान का वह रूप हर तरफ फैला हुआ था। उनके शरीर पर दिव्य वस्त्राभूषण थे और उनके अनगिनत हाथों में सृष्टि की रक्षा और संहार के शस्त्र थे। वह दृश्य इतना भव्य था कि उसे देख पाना साधारण बुद्धि के परे था।

यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा का विराट स्वरूप समस्त शक्तियों, सौंदर्य और अनंतता का एक साथ प्रकटीकरण है।

श्लोक संख्या: **11.12**

> दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता |
>
> यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः || **12** ||

हिन्दी अनुवाद:
आकाश में एक साथ हजार सूर्यों के उदय होने से जो प्रकाश उत्पन्न होता, वह भी उस विश्वरूप परमात्मा के प्रकाश के सदृश शायद ही हो।

सरल व्याख्या:
भगवान के तेज की तुलना करने के लिए संजय को संसार में कोई उपमा नहीं मिली। वे कहते हैं कि कल्पना करो अगर आसमान में एक साथ हजार सूरज चमकने लगें, तो कितनी रोशनी होगी? फिर भी वह रोशनी उस विराट पुरुष के तेज के सामने फीकी ही होती। यह प्रकाश आँखों को चुंधियाने वाला नहीं, बल्कि चेतना को जगाने वाला अलौकिक प्रकाश था।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर का वास्तविक तेज भौतिक जगत के किसी भी प्रकाश से अनगिनत गुना अधिक श्रेष्ठ और दिव्य है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.13**

> तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा |
>
> अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा || **13** ||

हिन्दी अनुवाद:
उस समय अर्जुन ने देवों के देव भगवान श्रीकृष्ण के उस शरीर में, अनेक प्रकार से विभाजित हुए संपूर्ण जगत को एक जगह स्थित देखा।

सरल व्याख्या:
विराट रूप का अर्थ केवल विशालता नहीं है। अर्जुन ने देखा कि यह जो अलग-अलग दिखने वाला संसार है (पहाड़, नदियाँ, मनुष्य, देवता), वह सब वास्तव में अलग नहीं है। वे सब उस एक ही परमात्मा के शरीर के भीतर छोटे-छोटे अंगों की तरह एक साथ जुड़े हुए हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... अनेकता में एकता का वास्तविक अनुभव ही परमात्मा का दर्शन है।

श्लोक संख्या: **11.14**

> ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनञ्जयः |
>
> प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत || **14** ||

हिन्दी अनुवाद:
तब वे आश्चर्य से चकित और रोमांचित शरीर वाले अर्जुन, उन दिव्य रूपधारी भगवान को मस्तक झुकाकर प्रणाम करते हुए हाथ जोड़कर बोले।

सरल व्याख्या:
इस दृश्य को देखकर अर्जुन के शरीर के रोंगटे खड़े हो गए। वे पूरी तरह दंग रह गए। उनके भीतर का अहंकार पूरी तरह मिट गया और वे केवल श्रद्धा से भर गए। जब मनुष्य ईश्वर की विशालता को देखता है, तो वह स्वतः ही छोटा होकर नतमस्तक हो जाता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... सत्य का अनुभव होने पर मनुष्य के भीतर स्वतः ही परम विनय और भक्ति का उदय होता है।

श्लोक संख्या: **11.15**

> अर्जुन उवाच
>
> पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वान्तथा भूतविशेषसङ्घान् |
>
> ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान् || **15** ||

हिन्दी अनुवाद:
अर्जुन बोले—हे देव! मैं आपके शरीर में समस्त देवताओं को और अनेक प्राणियों के समूहों को, कमल के आसन पर स्थित ब्रह्मा जी को, महादेव शिव को, समस्त ऋषियों को और दिव्य सर्पों को देख रहा हूँ।

सरल व्याख्या:
यहाँ से अर्जुन का 'दर्शन' शुरू होता है। वे अपनी आँखों से देख रहे हैं कि पूरी सृष्टि—चाहे वह सूक्ष्म जगत के देवता हों या इस धरती के प्राणी—सब भगवान के भीतर ही निवास कर रहे हैं। जिसे हम ऊपर या नीचे कहते हैं, वह सब ईश्वर के विराट शरीर का ही हिस्सा है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... समस्त लोक और उनके अधिपति परमात्मा के ही आश्रित हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.16**

> अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वा सर्वतोऽनन्तरूपम् |
>
> नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप || **16** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे विश्व के स्वामी! हे विश्वरूप! मैं आपको सब ओर से अनन्त हाथों, पेटों, मुखों और नेत्रों से युक्त देख रहा हूँ। मैं आपके न अंत को देखता हूँ, न मध्य को और न आदि को।

सरल व्याख्या:
अर्जुन अब चकित हैं क्योंकि वे जहाँ भी देखते हैं, उन्हें भगवान ही दिखाई देते हैं। भगवान की न कोई सीमा है, न कोई किनारा। उन्हें समझ नहीं आ रहा कि यह रूप कहाँ से शुरू होता है और कहाँ खत्म। यह 'अनंत' का साक्षात अनुभव है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा असीम हैं, वे समय और स्थान **(Space and Time)** की सीमाओं से परे हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.17**

> किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम् |
>
> पश्यामि त्वा दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् || **17** ||

हिन्दी अनुवाद:
मैं आपको मुकुट धारण किए हुए, गदा और चक्र लिए हुए, सब ओर से प्रकाशमान तेज के पुंज के रूप में देख रहा हूँ। प्रज्वलित अग्नि और सूर्य के समान आपके इस अत्यंत दीप्तिमान रूप को देख पाना बहुत कठिन है, क्योंकि यह सब ओर से अप्रमेय (बुद्धि से परे) है।

सरल व्याख्या:
भगवान का यह रूप इतना तेजस्वी है कि उस पर नज़र टिकाना भी मुश्किल है। वे एक ओर तो शांत मुकुटधारी हैं और दूसरी ओर प्रलयंकारी अग्नि की तरह दमक रहे हैं। अर्जुन स्वीकार करते हैं कि यह रूप नापा नहीं जा सकता; यह बुद्धि और तर्क की पहुँच से बहुत ऊपर है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर का स्वरूप केवल प्रेम और कृपा से ही सहा जा सकता है, तर्क की शक्ति वहाँ हार मान लेती है।

श्लोक संख्या: **11.18**

> त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् |
>
> त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे || **18** ||

हिन्दी अनुवाद:
आप ही जानने योग्य 'परम अक्षर' (अविनाशी ब्रह्म) हैं; आप ही इस जगत के परम आधार हैं; आप ही सनातन धर्म के रक्षक हैं और आप ही अविनाशी सनातन पुरुष हैं—ऐसा मेरा मत है (अर्थात मुझे अनुभव हो रहा है)।

सरल व्याख्या:
दर्शन करने के बाद अर्जुन अब घोषणा करते हैं। वे कहते हैं कि प्रभु, अब मुझे संदेह नहीं कि आप ही वे 'अक्षर ब्रह्म' हैं जिनकी चर्चा वेदों में है। आप ही वह शक्ति हैं जो धर्म को बचाए रखती है। आप ही वह पुराने से भी पुराने (सनातन) सत्य हैं जो कभी नष्ट नहीं होता।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा ही समस्त ज्ञान का अंतिम सार और इस ब्रह्मांड का शाश्वत आधार हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.19**

> अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् |
>
> पश्यामि त्वा दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम् || **19** ||

हिन्दी अनुवाद:
मैं आपको आदि, मध्य और अंत से रहित, अनंत सामर्थ्य से युक्त, अनगिनत भुजाओं वाले, सूर्य और चंद्रमा रूपी नेत्रों वाले देख रहा हूँ। प्रज्वलित अग्नि के समान आपके मुख से अपने तेज द्वारा आप इस संसार को तपा रहे हैं।

सरल व्याख्या:
अर्जुन देख रहे हैं कि भगवान की शक्ति का न कोई प्रारंभ है और न ही अंत। उनके नेत्रों में सूर्य का तेज और चंद्रमा की शीतलता दोनों हैं। उनका मुख प्रलय की अग्नि की तरह धधक रहा है, जिससे पूरा ब्रह्मांड संतप्त हो रहा है। यह दृश्य अब सौम्य से उग्र होने लगा है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा केवल सृजनकर्ता ही नहीं, बल्कि उस प्रचंड ऊर्जा का केंद्र भी हैं जिससे सृष्टि का नियमन और संहार होता है।

श्लोक संख्या: **11.20**

> द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः |
>
> दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् || **20** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे महात्मन! यह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का अंतराल तथा समस्त दिशाएँ अकेले आपसे ही व्याप्त हैं। आपके इस अद्भुत और उग्र रूप को देखकर तीनों लोक अत्यंत व्यथित (भयभीत) हो रहे हैं।

सरल व्याख्या:
अर्जुन को अब आभास हो रहा है कि भगवान के अलावा कहीं कोई खाली जगह नहीं है। आकाश, पाताल और धरती—सब उनके विराट स्वरूप में समाए हैं। यह रूप इतना विराट और भयंकर है कि इसे देखकर केवल अर्जुन ही नहीं, बल्कि तीनों लोकों के प्राणी कांप रहे हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर की सर्वव्यापकता जब अपने वास्तविक रूप में प्रकट होती है, तो वह मानवीय कल्पना और साहस को हिला देती है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.21**

> अमी हि त्वा सुरसङ्घा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति |
>
> स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः स्तुवन्ति त्वा स्तुतिभिः पुष्कलाभिः || **21** ||

हिन्दी अनुवाद:
वे देवताओं के समूह आपमें ही प्रवेश कर रहे हैं; कुछ भयभीत होकर हाथ जोड़े आपके नाम और गुणों का उच्चारण कर रहे हैं। महर्षियों और सिद्धों के समुदाय "कल्याण हो!" (स्वस्ति) ऐसा कहकर उत्तम स्तोत्रों द्वारा आपकी स्तुति कर रहे हैं।

सरल व्याख्या:
विराट रूप के भीतर अर्जुन देख रहे हैं कि बड़े-बड़े देवता भी ईश्वर की शरण में समा रहे हैं। कुछ भय से प्रार्थना कर रहे हैं, तो ऋषि-मुनि संसार की शांति के लिए मंगल कामना करते हुए ईश्वर की महिमा गा रहे हैं। यहाँ भक्ति, भय और विस्मय का अद्भुत संगम है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... अंततः समस्त शक्तियाँ और सिद्धियाँ परमात्मा में ही विलीन होती हैं।

श्लोक संख्या: **11.22**

> रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च |
>
> गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घा वीक्षन्ते त्वा विस्मिताश्चैव सर्वे || **22** ||

हिन्दी अनुवाद:
जो ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, आठ वसु, साध्यगण, विश्वेदेव, अश्विनीकुमार, मरुद्गण, पितर तथा गंधर्व, यक्ष, असुर और सिद्धों के समुदाय हैं—वे सब चकित होकर आपको देख रहे हैं।

सरल व्याख्या:
ब्रह्मांड की जितनी भी श्रेणियां हैं—चाहे वे दिव्य हों या आसुरी—सब उस महान दृश्य को देखकर स्तब्ध हैं। कोई भी उस विराटता के सामने खड़ा होने योग्य नहीं है; सब केवल विस्मय के साथ उस 'परम सत्य' को निहार रहे हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा के प्रत्यक्ष प्रकटीकरण के सामने संसार की हर शक्ति छोटी और प्रभावहीन पड़ जाती है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.23**

> रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहूरुपादम् |
>
> बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम् || **23** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे महाबाहो! आपके बहुत से मुख और नेत्रों वाले, बहुत सी भुजाओं, जंघाओं और पैरों वाले, बहुत से उदरों (पेट) वाले और बहुत सी दाढ़ों के कारण अत्यंत विकराल रूप को देखकर समस्त लोक व्यथित हो रहे हैं और मैं भी व्याकुल हो रहा हूँ।

सरल व्याख्या:
अब अर्जुन का भय स्पष्ट दिखने लगा है। उन्हें भगवान के मुख में बड़ी-बड़ी दाढ़ें और भयानक स्वरूप दिख रहा है। यह भगवान का 'काल' रूप है जो सब कुछ निगलने के लिए तैयार है। इसे देखकर अर्जुन की हिम्मत जवाब दे रही है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... मृत्यु और विनाश भी परमात्मा का ही एक पक्ष है, जिसे देख पाना एक साधारण जीव के लिए अत्यंत दुष्कर है।

श्लोक संख्या: **11.24**

> नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम् |
>
> दृष्ट्वा हि त्वा प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो || **24** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे विष्णु! आकाश को स्पर्श करने वाले, देदीप्यमान, अनेक वर्णों से युक्त, खुले हुए मुख और चमकते हुए विशाल नेत्रों वाले आपको देखकर भयभीत अंतःकरण वाला मैं न धैर्य धारण कर पा रहा हूँ और न शांति ही प्राप्त कर रहा हूँ।

सरल व्याख्या:
अर्जुन की स्थिति अब अत्यंत दयनीय हो गई है। वे कहते हैं कि "हे विष्णु! आपका यह आकाशगामी रूप देखकर मेरा मन कांप रहा है। न मुझे कहीं चैन मिल रहा है, न ही मैं खुद को संभाल पा रहा हूँ।" यह ईश्वर के उस तेज का प्रभाव है जिसे मनुष्य की बुद्धि सहन नहीं कर पाती।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा की प्रचंड शक्ति का साक्षात्कार होने पर मनुष्य का अहंकार और धैर्य पूरी तरह गल जाता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.25**

> दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि |
>
> दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास || **25** ||

हिन्दी अनुवाद:
दाढ़ों के कारण विकराल और प्रलय की अग्नि के समान प्रज्वलित आपके मुखों को देखकर मुझे दिशाओं का ज्ञान नहीं हो रहा है और न ही सुख मिल रहा है। हे देवेश! हे जगन्निवास! आप प्रसन्न हों।

सरल व्याख्या:
अर्जुन को अब दिशाएं भी नहीं सूझ रही हैं। उन्हें हर तरफ विनाशकारी अग्नि और काल के मुख दिख रहे हैं। वे घबराकर भगवान से प्रार्थना करते हैं कि "हे प्रभो! अपनी प्रसन्नता लौटा लाइये, मुझे अब भय लग रहा है।"

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जब ईश्वर का संहारक रूप प्रकट होता है, तब जीव केवल उनकी दया और प्रसन्नता की ही भीख मांगता है।

श्लोक संख्या: **11.26-27**

> अमी च त्वा धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः |
>
> भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः || **26** ||
>
> वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि |
>
> केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः || **27** ||

हिन्दी अनुवाद:
वे धृतराष्ट्र के सभी पुत्र राजाओं के समूहों सहित और भीष्म, द्रोण तथा वह कर्ण भी, हमारे पक्ष के मुख्य योद्धाओं के साथ आपके विकराल दाढ़ों वाले भयानक मुखों में बड़ी तेजी से प्रवेश कर रहे हैं। उनमें से कई तो आपके दांतों के बीच में फँसे हुए और पिसे हुए सिरों के साथ दिखाई दे रहे हैं।

सरल व्याख्या:
यहाँ अर्जुन को भविष्य दिखाई दे रहा है। जिन योद्धाओं (भीष्म, द्रोण, कर्ण) से वे डर रहे थे, उन्हें वे साक्षात काल के मुख में समाते देख रहे हैं। यह इस बात का संकेत है कि युद्ध का निर्णय तो पहले ही हो चुका है; भगवान ने सबको काल के ग्रास में ले लिया है, अर्जुन तो बस एक माध्यम बनेंगे।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... समय (काल) अनिवार्य रूप से सबका अंत करता है, और बड़ी से बड़ी शक्ति भी उसके सामने टिक नहीं सकती।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.28**

> यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति |
>
> तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति || **28** ||

हिन्दी अनुवाद:
जैसे नदियों के बहुत से जल-प्रवाह स्वाभाविक रूप से समुद्र की ओर ही दौड़ते हैं, वैसे ही वे मनुष्य लोक के वीर योद्धा आपके प्रज्वलित मुखों में प्रवेश कर रहे हैं।

सरल व्याख्या:
भगवान ने एक सुंदर उदाहरण दिया है। जैसे नदियाँ चाहे कितनी भी वेगवती क्यों न हों, अंततः समुद्र में ही विलीन होती हैं, वैसे ही संसार के पराक्रमी योद्धा अंततः मृत्यु (काल) के मुख में ही समा जाते हैं। यह संसार का शाश्वत नियम है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... मृत्यु जीवन का वह अंतिम सत्य है जिसमें संसार की समस्त गतियां और शक्तियाँ समाहित हो जाती हैं।

श्लोक संख्या: **11.29**

> यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः |
>
> तथैव नाशाय विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः || **29** ||

हिन्दी अनुवाद:
जैसे पतंगे मोहवश नष्ट होने के लिए प्रज्वलित अग्नि में बड़ी तेजी से प्रवेश करते हैं, वैसे ही ये सब लोग भी अपने विनाश के लिए आपके मुखों में बड़ी तेजी से समा रहे हैं।

सरल व्याख्या:
अर्जुन देख रहे हैं कि जैसे पतंगा आग की चमक से सम्मोहित होकर खुद को जला देता है, वैसे ही संसार के जीव अपने अहंकार और मोह में अंधे होकर मृत्यु की ओर भागे जा रहे हैं। विनाश का यह दृश्य अत्यंत तीव्र और अवश्यंभावी है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... मोह और अज्ञानवश जीव स्वयं ही अपने विनाश की ओर खिंचा चला जाता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.30**

> लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः |
>
> तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो || **30** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे विष्णो! आप अपने प्रज्वलित मुखों द्वारा संपूर्ण लोकों को सब ओर से निगलते हुए चाट रहे हैं। आपका उग्र प्रकाश अपने तेज से पूरे जगत को परिपूर्ण करके तपा रहा है।

सरल व्याख्या:
भगवान का वह विराट मुख अब एक धधकती भट्टी की तरह लग रहा है जो सब कुछ भस्म कर रहा है। अर्जुन को अब प्रभु की सौम्यता नहीं, बल्कि उनका वह भयानक संहारक रूप दिख रहा है जो सृष्टि के नवीनीकरण के लिए पुराने का अंत कर रहा है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा की शक्ति जब संहार पर आती है, तो कुछ भी शेष नहीं बचता।

श्लोक संख्या: **11.31**

> आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद |
>
> विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् || **31** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे उग्र रूप वाले! मुझे बताइये कि आप वास्तव में कौन हैं? हे देवों में श्रेष्ठ! आपको नमस्कार हो, आप प्रसन्न हों। मैं आप आदि पुरुष को तत्व से जानना चाहता हूँ, क्योंकि मैं आपकी इस चेष्टा (प्रवृत्ति) को समझ नहीं पा रहा हूँ।

सरल व्याख्या:
अर्जुन पूरी तरह चकित और डरे हुए हैं। वे अपने सखा कृष्ण को इस रूप में देखकर पहचान नहीं पा रहे। वे पूछते हैं, "प्रभु, आपकी इस विनाशकारी लीला का उद्देश्य क्या है? आप इस समय क्या करना चाह रहे हैं?" यह जिज्ञासा उस सत्य को जानने की है जो विनाश के पीछे छिपा है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जब ईश्वर की लीला समझ से बाहर हो जाए, तब केवल प्रार्थना और समर्पण ही मार्ग दिखाता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.32**

> श्रीभगवानुवाच
>
> कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः |
>
> ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः || **32** ||

हिन्दी अनुवाद:
श्रीभगवान बोले—मैं लोकों का नाश करने वाला बढ़ा हुआ 'काल' (समय) हूँ। इस समय मैं लोकों का संहार करने के लिए प्रवृत्त हुआ हूँ। प्रतिपक्षी सेनाओं में जो भी योद्धा स्थित हैं, वे तेरे युद्ध न करने पर भी जीवित नहीं बचेंगे।

सरल व्याख्या:
यह गीता का अत्यंत शक्तिशाली श्लोक है। भगवान कहते हैं कि मैं 'समय' हूँ। समय सबको निगल जाता है। अर्जुन, तुम यह मत सोचो कि तुम युद्ध करोगे तभी ये लोग मरेंगे। इन सबका समय पूरा हो चुका है, इनका अंत निश्चित है। तुम लड़ो या न लड़ो, ये सब काल के द्वारा पहले ही मारे जा चुके हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... काल के विधान के आगे किसी की नहीं चलती; जो होना है, वह परमात्मा के विधान में पहले ही तय हो चुका है।

श्लोक संख्या: **11.33**

> तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम् |
>
> मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् || **33** ||

हिन्दी अनुवाद:
इसलिए तू उठ! यश प्राप्त कर और शत्रुओं को जीतकर समृद्ध राज्य का उपभोग कर। ये सब पहले ही मेरे द्वारा मारे जा चुके हैं, हे सव्यसाचिन् (बाएं हाथ से बाण चलाने वाले अर्जुन)! तू तो केवल 'निमित्त मात्र' बन जा।

सरल व्याख्या:
भगवान अर्जुन को कर्म के लिए प्रेरित कर रहे हैं। वे कहते हैं कि जब मैंने इन्हें मार ही दिया है, तो तुम क्यों पीछे हट रहे हो? तुम बस एक औजार (निमित्त) बन जाओ। यश तुम्हें मिलेगा, राज्य तुम्हें मिलेगा, पर काम मेरा होगा। यह 'निमित्त मात्र' का भाव ही कर्मयोग की पराकाष्ठा है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... हम केवल ईश्वर के हाथों के यंत्र हैं; कर्तापन का अहंकार छोड़कर कर्तव्य करना ही श्रेष्ठता है।

श्लोक संख्या: **11.34**

> द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान् |
>
> मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान् || **34** ||

हिन्दी अनुवाद:
द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह, जयद्रथ, कर्ण तथा अन्य बहुत से वीर योद्धा मेरे द्वारा पहले ही मारे जा चुके हैं। तू उन्हें मार! भयभीत मत हो और युद्ध कर। युद्ध में तू निश्चित ही अपने शत्रुओं को जीतेगा।

सरल व्याख्या:
अर्जुन जिन योद्धाओं के सामने शस्त्र उठाने से कांप रहे थे, भगवान ने उनके वध का आश्वासन दे दिया। वे कहते हैं कि जिनकी मृत्यु तुम्हारे लिए असंभव लग रही है, उन्हें मैंने पहले ही समाप्त कर दिया है। तुम बस अपना धर्म निभाओ और जीत का वरण करो।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जब ईश्वर का साथ हो और धर्म की राह हो, तो विजय सुनिश्चित है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.35**

> सञ्जय उवाच
>
> एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी |
>
> नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य || **35** ||

हिन्दी अनुवाद:
संजय बोले—केशव के इन वचनों को सुनकर मुकुटधारी अर्जुन ने हाथ जोड़कर कांपते हुए भगवान कृष्ण को नमस्कार किया और अत्यंत भयभीत होकर, गद्गद वाणी से प्रणाम करते हुए इस प्रकार कहा।

सरल व्याख्या:
भगवान की वाणी सुनकर अर्जुन का हृदय भर आया। वे कांप रहे हैं, उनकी आवाज लड़खड़ा रही है (गद्गद)। यह भय भी है और असीम श्रद्धा भी। वे समझ चुके हैं कि उनके सामने साक्षात ब्रह्मांड का स्वामी खड़ा है, जो समय का भी महाकाल है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा की विराटता का अनुभव होने पर जीव का हृदय पूरी तरह द्रवित हो जाता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.36**

> अर्जुन उवाच
>
> स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च |
>
> रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः || **36** ||

हिन्दी अनुवाद:
अर्जुन बोले—हे हृषीकेश! यह ठीक ही है कि आपके नाम और महिमा के कीर्तन से जगत हर्षित हो रहा है और अनुराग (प्रेम) को प्राप्त हो रहा है। राक्षस लोग भयभीत होकर दिशाओं में भाग रहे हैं और समस्त सिद्धगण आपको नमस्कार कर रहे हैं।

सरल व्याख्या:
अर्जुन कहते हैं कि प्रभु, आपकी महिमा ऐसी है कि जो आपसे प्रेम करते हैं, उन्हें आनंद मिलता है, और जो आपसे बैर रखते हैं (राक्षसी वृत्ति वाले), वे आपके तेज के सामने टिक नहीं पाते और भाग खड़े होते हैं। यह सृष्टि का न्याय है कि बुराई आपसे डरती है और अच्छाई आपमें शरण पाती है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर की सत्ता भक्तों के लिए आनंद और दुष्टों के लिए भय का कारण होती है।

श्लोक संख्या: **11.37**

> कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे |
>
> अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् || **37** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे महात्मन! वे आपको नमस्कार क्यों न करें? आप ब्रह्मा के भी आदि कर्ता और सबसे बड़े हैं। हे अनंत! हे देवेश! हे जगन्निवास! आप ही अक्षर (अविनाशी), सत् (विद्यमान), असत् (अविद्यमान) और उनसे परे जो परम तत्व है, वह भी आप ही हैं।

सरल व्याख्या:
अर्जुन तर्क दे रहे हैं कि आपकी पूजा क्यों न हो? आप तो उनके भी रचयिता हैं जिन्हें हम रचनाकार (ब्रह्मा) कहते हैं। जो दिखता है और जो नहीं दिखता, उन सबके पीछे जो असली सत्ता है, वह आप ही हैं। आप समस्त सीमाओं से परे 'अनंत' हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा समस्त कारणों के मूल कारण और सबसे श्रेष्ठ पूजनीय सत्ता हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.38**

> त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् |
>
> वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप || **38** ||

हिन्दी अनुवाद:
आप आदि देव और सनातन पुरुष हैं; आप इस जगत के परम आधार हैं। आप ही जानने वाले (ज्ञाता) हैं और जानने योग्य (ज्ञान) भी आप ही हैं तथा आप ही परम धाम हैं। हे अनन्त रूप! आपसे ही यह संपूर्ण जगत व्याप्त है।

सरल व्याख्या:
अर्जुन कह रहे हैं कि प्रभु, इस संसार को जानने वाले भी आप हैं और जो कुछ जाना जा सकता है, वह भी आप ही हैं। आप ही वह अंतिम स्थान हैं जहाँ पहुँचकर जीव मुक्त हो जाता है। यह सारा विश्व आपके ही शरीर का विस्तार है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय—इन तीनों रूपों में केवल एक परमात्मा ही स्थित है।

श्लोक संख्या: **11.39**

> वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च |
>
> नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते || **39** ||

हिन्दी अनुवाद:
आप ही वायु, यमराज, अग्नि, वरुण, चंद्रमा, प्रजापति (ब्रह्मा) और प्रपितामह (ब्रह्मा के भी पिता) हैं। आपको हजारों बार नमस्कार हो! आपके लिए बार-बार, फिर-फिर नमस्कार हो!

सरल व्याख्या:
अर्जुन देख रहे हैं कि प्रकृति की जितनी भी संचालक शक्तियाँ हैं, वे सब कृष्ण के ही विभिन्न रूप हैं। वे इतने अभिभूत हैं कि उनके पास शब्द कम पड़ रहे हैं, इसलिए वे बार-बार केवल 'नमस्कार' कर रहे हैं। वे स्वीकार करते हैं कि आप ही सृष्टि के आदि पुरुष और सबके मूल पूर्वज हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा ही समस्त प्राकृतिक शक्तियों और सृजन के आदिकर्ता हैं, जिनके प्रति केवल पूर्ण समर्पण ही हमारी एकमात्र प्रतिक्रिया होनी चाहिए।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.40**

> नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व |
>
> अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः || **40** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे सर्वस्वरूप! आपको आगे से नमस्कार, पीछे से नमस्कार और सब ओर से ही नमस्कार हो। हे अनंत सामर्थ्य वाले! आप असीम पराक्रम के स्वामी हैं। आप सब कुछ व्याप्त किए हुए हैं, इसलिए आप ही 'सब' (सर्वरूप) हैं।

सरल व्याख्या:
अर्जुन की दृष्टि जहाँ भी जाती है, उन्हें भगवान ही दिखते हैं। इसलिए वे कहते हैं कि मैं आपको किस दिशा से नमन करूँ? आप तो हर तरफ हैं। आपकी शक्ति और पराक्रम की कोई सीमा नहीं है। जैसे सूत के बिना कपड़ा नहीं होता, वैसे ही आपके बिना यह संसार नहीं है; इसलिए आप ही सब कुछ हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर की सर्वव्यापकता को पहचान लेने के बाद साधक को हर कण में परमात्मा के ही दर्शन होते हैं।

श्लोक संख्या: **11.41-42**

> सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति |
>
> अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि || **41** ||
>
> यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु |
>
> एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् || **42** ||

हिन्दी अनुवाद:
आपकी इस महिमा को न जानते हुए, मेरे द्वारा प्रमाद (अज्ञान) से या प्रेमवश, "हे कृष्ण!", "हे यादव!", "हे सखे!"—इस प्रकार हठपूर्वक जो कुछ भी कहा गया है; और हे अच्युत! हँसी-मजाक में, चलते-फिरते, सोते, बैठते या भोजन के समय, अकेले में या दूसरों के सामने जो आपका अपमान हुआ है, उन सबके लिए मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ।

सरल व्याख्या:
विराट रूप देखने के बाद अर्जुन को अपनी छोटी सोच पर पछतावा हो रहा है। वे कहते हैं, "प्रभु! मैं आपको केवल अपना मित्र समझता रहा। मैंने कभी आपको नाम से पुकारा, कभी मजाक उड़ाया। मुझे पता ही नहीं था कि मेरे साथ बैठने वाला यह साधारण सखा साक्षात ब्रह्मांड का स्वामी है।" यह भक्त की अत्यंत विनम्र और व्याकुल अवस्था है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... अज्ञानवश हम ईश्वर को अपनी सीमाओं में बाँध लेते हैं, पर ज्ञान होने पर अहंकार गल जाता है और केवल पश्चाताप व विनम्रता शेष रहती है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.43**

> पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् |
>
> न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव || **43** ||

हिन्दी अनुवाद:
आप इस चराचर जगत के पिता हैं और सबसे बड़े पूजनीय गुरु हैं। हे अनुपम प्रभाव वाले! तीनों लोकों में आपके समान भी कोई दूसरा नहीं है, फिर आपसे अधिक तो कोई कैसे हो सकता है?

सरल व्याख्या:
अर्जुन स्वीकार करते हैं कि ज्ञान देने में आप सर्वश्रेष्ठ गुरु हैं और जन्म देने में सर्वश्रेष्ठ पिता। इस पूरे ब्रह्मांड में आपकी टक्कर का कोई नहीं है। जब कोई आपके बराबर ही नहीं है, तो आपसे बड़ा होने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। आप अद्वितीय (Unique) हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा सर्वोच्च सत्ता है, जिनसे श्रेष्ठ या जिनके समान ब्रह्मांड में कोई दूसरा तत्व नहीं है।

श्लोक संख्या: **11.44**

> तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमिशमीड्यम् |
>
> पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् || **44** ||

हिन्दी अनुवाद:
अतः मैं शरीर को चरणों में डालकर और भली-भाँति प्रणाम करके, आप स्तुति करने योग्य ईश्वर को प्रसन्न होने के लिए प्रार्थना करता हूँ। हे देव! जैसे पिता पुत्र के, मित्र मित्र के और पति अपनी प्रिय पत्नी के अपराधों को सह लेता है, वैसे ही आप भी मेरे अपराधों को क्षमा करने योग्य हैं।

सरल व्याख्या:
अर्जुन साष्टांग प्रणाम करके भगवान की कृपा माँग रहे हैं। वे बहुत सुंदर तर्क देते हैं—जैसे पिता अपने बच्चे की गलतियों को दिल से नहीं लगाता या मित्र अपने मित्र की कड़वी बातों को भुला देता है, वैसे ही आप भी मेरी भूलों को क्षमा कर दें। वे भगवान से 'सखा' वाले पुराने संबंध की सहजता की याचना कर रहे हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर केवल न्यायकर्ता ही नहीं, बल्कि परम करुणामय पिता और मित्र भी हैं जो सच्चे हृदय से माँगी गई क्षमा को स्वीकार करते हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.45**

> अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे |
>
> तदेव मे दर्शय देव रूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास || **45** ||

हिन्दी अनुवाद:
पहले कभी न देखे गए आपके इस आश्चर्यमय रूप को देखकर मैं हर्षित हो रहा हूँ, किंतु मेरा मन भय से अत्यंत व्याकुल भी है। इसलिए हे देव! आप अपने उसी (सौम्य) रूप को मुझे दिखाइये। हे देवेश! हे जगन्निवास! प्रसन्न होइये।

सरल व्याख्या:
अर्जुन की स्थिति मिश्रित है। उन्हें खुशी है कि उन्होंने वह देख लिया जो दुर्लभ है, पर वह विराटता इतनी प्रचंड है कि वे उसे और अधिक सहन नहीं कर पा रहे। वे घबराकर वापस उसी पुराने, परिचित और शांत कृष्ण के दर्शन करना चाहते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर की प्रचंड शक्ति विस्मय तो जगाती है, पर जीव का मन उनके सौम्य और प्रेममय रूप में ही शांति पाता है।

श्लोक संख्या: **11.46**

> किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वा द्रष्टुमहं तथैव |
>
> तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते || **46** ||

हिन्दी अनुवाद:
मैं आपको वैसे ही मुकुट धारण किए हुए तथा हाथ में गदा और चक्र लिए हुए देखना चाहता हूँ। हे सहस्रबाहो! हे विश्वरूप! आप अपने उसी चतुर्भुज रूप में प्रकट होइये।

सरल व्याख्या:
अर्जुन प्रार्थना करते हैं कि हे हजारों हाथों वाले प्रभु! अब आप अपनी इस अनंत भुजाओं को समेट लीजिये और अपने उस सुंदर चतुर्भुज (विष्णु) रूप में आ जाइये जिसे देखना सुखद है। वे विराटता के आतंक से निकलकर भक्ति की कोमलता में लौटना चाहते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... भक्त के लिए भगवान का वह रूप ही सबसे प्रिय है जो उसके साथ प्रेम और संवाद का संबंध बना सके।

श्लोक संख्या: **11.47**

> श्रीभगवानुवाच
>
> मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात् |
>
> तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् || **47** ||

Satyaanubhuti Ashram

हिन्दी अनुवाद:
श्रीभगवान बोले—हे अर्जुन! तुझ पर प्रसन्न होकर मैंने अपनी योग-शक्ति से अपना यह परम तेजोमय, अनंत, सबका आदि और श्रेष्ठ विश्वरूप तुझे दिखाया है, जिसे तेरे सिवा पहले किसी ने नहीं देखा था।

सरल व्याख्या:
भगवान कहते हैं कि अर्जुन, यह जो तुमने देखा, यह कोई डराने वाली चीज नहीं बल्कि मेरी विशेष कृपा है। यह मेरा सबसे ऊँचा स्वरूप है। जो ऋषि-मुनि युगों तक तपस्या करते हैं, उन्हें भी यह दर्शन दुर्लभ है। मैंने यह केवल इसलिए दिखाया क्योंकि मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा का साक्षात्कार किसी योग्यता से नहीं, बल्कि केवल उनकी प्रसन्नता और अनुग्रह से ही संभव है।

श्लोक संख्या: **11.48**

> न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः |
>
> एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर || **48** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे कुरुश्रेष्ठ! मनुष्य लोक में इस प्रकार के विश्वरूप वाला मैं न वेदों के अध्ययन से, न यज्ञों से, न दान से, न क्रियाओं से और न उग्र तपस्याओं से ही तेरे अतिरिक्त किसी दूसरे द्वारा देखा जा सकता हूँ।

सरल व्याख्या:
भगवान यहाँ स्पष्ट कर रहे हैं कि केवल बाहरी कर्मकांडों से उन्हें नहीं पाया जा सकता। कोई चाहे कितना ही दान दे दे या कठिन तप कर ले, वह मेरे इस असली स्वरूप को तब तक नहीं देख सकता जब तक उसके भीतर 'अनन्य भक्ति' न हो। अर्जुन, तुमने इसे देखा क्योंकि तुम मेरे अनन्य प्रेमी हो।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर को जानने के लिए आंतरिक प्रेम और निष्काम भक्ति ही एकमात्र चाबी है, बाहरी साधन नहीं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.49**

> मा ते व्यथा मा च विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम् |
>
> व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य || **49** ||

हिन्दी अनुवाद:
मेरे इस प्रकार के इस विकराल रूप को देखकर तुझे व्यथा (पीड़ा) नहीं होनी चाहिए और न ही मूढ़भाव (मोह) होना चाहिए। तू भयरहित और प्रसन्न मन वाला होकर, मेरे उसी (पहले वाले) रूप को फिर से देख।

सरल व्याख्या:
भगवान अर्जुन को सांत्वना दे रहे हैं कि उनके उग्र रूप को डराने के लिए नहीं, बल्कि सत्य का बोध कराने के लिए दिखाया गया था। वे अब अर्जुन को अपने सौम्य रूप में लौटने का आश्वासन दे रहे हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा का उग्र रूप ज्ञान के लिए है, पर उनकी कृपा और प्रेम ही साधक के भय को दूर कर उसे शांति प्रदान करते हैं।

श्लोक संख्या: **11.50**

> सञ्जय उवाच
>
> इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः |
>
> आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा || **50** ||

हिन्दी अनुवाद:
संजय बोले—वासुदेव भगवान ने अर्जुन से ऐसा कहकर, फिर वैसा ही अपना (चतुर्भुज) रूप दिखाया और फिर महात्मा कृष्ण ने सौम्य शरीर वाला होकर, उस डरे हुए अर्जुन को धीरज बँधाया।

सरल व्याख्या:
भगवान ने अपनी अनंत भुजाओं को समेटा और पहले अपने दिव्य चतुर्भुज रूप में तथा उसके बाद सामान्य मानवीय रूप में प्रकट हुए, जिससे अर्जुन का मन शांत हुआ।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर भक्त की पुकार और उसकी मानसिक स्थिति के अनुरूप अपनी महानता को समेट कर सौम्यता धारण कर लेते हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.51**

> अर्जुन उवाच
>
> दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन |
>
> इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः || **51** ||

हिन्दी अनुवाद:
अर्जुन बोले—हे जनार्दन! आपके इस अति शांत मनुष्य रूप को देखकर अब मैं स्थिर-चित्त हो गया हूँ और अपनी स्वाभाविक स्थिति को प्राप्त हो गया हूँ।

सरल व्याख्या:
विराट रूप के विस्मय से बाहर आकर अर्जुन अब सहज महसूस कर रहे हैं। उन्हें अपने मित्र और सखा का वही चिर-परिचित चेहरा देखकर मानसिक राहत मिली है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जीव की चेतना अनंत की विराटता को अधिक समय तक सहन नहीं कर पाती; वह प्रेममय और सगुण रूप में ही स्थिरता पाती है।

श्लोक संख्या: **11.52**

> श्रीभगवानुवाच
>
> सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम |
>
> देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः || **52** ||

हिन्दी अनुवाद:
श्रीभगवान बोले—मेरा यह जो रूप तूने देखा है, इसके दर्शन अत्यंत दुर्लभ हैं। देवता भी सदा इस रूप के दर्शनों की आकांक्षा करते रहते हैं।

सरल व्याख्या:
भगवान अर्जुन को उस दर्शन का महत्व समझा रहे हैं। वे कह रहे हैं कि जिसे बड़े-बड़े देवता भी तरसते हैं, वह दिव्य अनुभव मैंने केवल तुम्हें दिया है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा का वास्तविक और विराट स्वरूप भौतिक नेत्रों या देव-शक्तियों के लिए भी दुर्लभ है, वह केवल विशेष कृपा से प्राप्त होता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **11.53**

> नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया |
>
> शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा || **53** ||

हिन्दी अनुवाद:
जिस प्रकार तूने मुझे देखा है, इस प्रकार मैं न वेदों से, न तप से, न दान से और न यज्ञ से ही देखा जा सकता हूँ।

सरल व्याख्या:
भगवान स्पष्ट करते हैं कि ज्ञान, तपस्या और बाहरी कर्मकांड ईश्वर को जानने में सहायक तो हो सकते हैं, पर उनके साक्षात दर्शन के लिए ये पर्याप्त नहीं हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... केवल बाहरी साधनाओं और कर्मों के अहंकार से परमात्मा की वास्तविकता का साक्षात्कार नहीं किया जा सकता।

श्लोक संख्या: **11.54**

> भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन |
>
> ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप || **54** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे परंतप अर्जुन! अनन्य भक्ति (बिना किसी अन्य सहारे की भक्ति) के द्वारा ही मैं इस प्रकार प्रत्यक्ष देखा जा सकता हूँ, तत्व से जाना जा सकता हूँ और मुझमें प्रवेश किया जा सकता है।

सरल व्याख्या:
यहाँ भगवान ने 'अनन्य भक्ति' को ही ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र माध्यम बताया है। जब भक्त के मन में केवल ईश्वर रह जाता है, तब वह उन्हें जान भी सकता है और उनमें लीन भी हो सकता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... पूर्ण समर्पण और अनन्य प्रेम ही वह चाबी है जो ईश्वर के साक्षात्कार के द्वार खोलती है।

श्लोक संख्या: **11.55**

> मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः |
>
> निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव || **55** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे पाण्डव! जो पुरुष केवल मेरे लिए ही कर्म करता है, मेरे परायण है, मेरा भक्त है, आसक्ति से रहित है और संपूर्ण प्राणियों में वैर भाव से रहित है, वह मुझे ही प्राप्त होता है।

सरल व्याख्या:
यह अध्याय 11 का अंतिम निष्कर्ष है। भगवान पाँच सूत्र देते हैं: निष्काम कर्म, ईश्वर परायणता, भक्ति, अनासक्ति और सब जीवों के प्रति करुणा।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... बिना किसी शत्रुता और बिना किसी स्वार्थ के कर्म करना ही भक्त को सीधे परमात्मा से जोड़ता है।

Satyaanubhuti Ashram

॥ ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो नामैकादशोऽध्यायः ॥

Satyaanubhuti Ashram